आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 339 ARYA SABHA MAURITIUS *26th Aug. to 2nd Sept. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

LES PRINCIPES FONDAMENTAUX DE L'EPANOUISSEMENT TOTAL DE LA VIE ESTUDIANTINE

La clé de la réussite de la vie de nos jeunes amis, les étudiants se trouvent dans la pratique du 'Brahma Yajna' comme énoncé par Maharishi Dayananda Saraswati pour faire fructifier leurs efforts dans leurs études. Ce 'Yajna' quotidien est un élément catalyseur qui complémente tous les efforts de nos amis dans l'acquisition de la connaissance avec succès.

Pour ce faire, d'abord on doit se lever tôt le matin, vers quatre heures, car c'est le moment prometteur où l'on reçoit la bénédiction divine, et c'est aussi connu comme le 'Brahma Muhurat' dans la Culture Védique.

Ce Yajna comprend le 'Sandhyā', la méditation (dhyāna), le Prānāyāma, et la lecture d'une, deux ou quelques pages d'un de nos livres sacrés tels que les Védas, le Satyārtha Prakāsh, le Ramāyana, le Bhagwat Gitā, etc.

Cela peut prendre une demi-heure au total.

Afin d'aider nos jeunes amis à entreprendre le 'Brahma Yajna' convenablement et avec beaucoup d'assurance, nous allons apporter un peu plus de précision à ce sujet :

Le Sandhyā (10 minutes) – on peut se référer au livre de Sandhyā en cas nécessaire

Il faut le faire deux fois par jour – le matin au lever du soleil et l'après-midi au coucher du soleil dans un endroit propre et paisible, en s'asseyant en posture du Lotus (Padmāsan) ou une autre posture ou la colonne vertébrale est maintenue tout droit. Pendant toute la durée du Sandhyā il faut se concentrer sur la signification de chaque verset (mantra) de notre prière car on est en communion avec le Seigneur. Cette action purifie notre âme.

La méditation (Dhyāna) Moins de Cinq minutes

C'est la récitation du Gayatri Mantra (Om ! Bhurbhuva Swaha ----) en gardant la même posture du Sandhyā. On peut le faire au moins trois fois ou plus, le matin et le soir. Au cours de la récitation du Gayatri Mantra il faut se concentrer sur la signification de chaque mot. Cela nous est très bénéfique. Cette action nous aide à développer notre capacité intellectuelle, à renforcer notre mémoire et à créer en nous des attitudes positives.

Il y a plusieurs façons de faire la méditation, mais ici nous avons choisi ce que Swami Dayananda a prescrit pour les étudiants, parce que c'est simple et facile à mettre en pratique.

La Lecture de nos livres sacrés -- 5 à 10 minutes

Cette action nous rapproche du Seigneur et nous aide à découvrir les messages universels de la spiritualité, de la moralité, du socialisme, du savoir et de toutes les disciplines de la science et des arts, entre autres, transmis par ces écrits pour le salut de toute l'humanité.

Le prānāyāma : 10 minutes

C'est le contrôle de la respiration. Pour ce faire il faut maintenir la posture du Sandhya et il faut se concentrer sur la syllabe 'Om', le nom suprême de Dieu, pendant cet exercice afin de recevoir sa bénédiction.

Il y a plusieurs façons de faire le Prānāyāma, mais notre choix s'est porté sur ce que le Grand Swami Dayanand a préconisé pour les jeunes dans le Satyārtha Prakāsh, son chef-d'œuvre, à cause de sa simplicité et de son côté pratique, c'est-à-dire, à la portée de tous.

(..... à suivre)

N. Ghoorah

युवा दिवस के अवसर पर हमारे नये डॉक्टर और कानून की उपाधि प्राप्त छात्रा सम्मानित

प्रतिवर्ष पन्द्रह अगस्त को 'आर्य युवक संघ' भारतीय स्वतन्त्रता दिवस के शुभावसर पर अपनी वर्षगाँठ राष्ट्रीय स्तर पर मनाता आ रहा है। इस वर्ष यह समारोह लाग्रेमाँ, सें पियेर के 'रामावतार मोहित भवन' में अनेक गण्यमान्य जनों की उपस्थिति में एक चित्ताकर्षक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि थे – वित्तमंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगनोथ। शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, माननीया लीला देवी दुखन लछुमन, नवागत भारतीय उच्चायुक्त, महा महिम अभय ठाकुर जी एवं विश्व हिन्दी सचिवालय के महासचिव, श्री विनोद कुमार मिश्र जी विशिष्ट अतिथियों में थे। इस राष्ट्रीय समारोह में मॉरीशस के सभी ज़िलों से युवावर्ग अच्छी संख्या में उपस्थित था।

युवक-युवतियों की विविध प्रस्तुतियों के अन्तर्गत पहली बार के लिए कुछ नए डॉक्टरों एवं विधि के क्षेत्र में उपाधि प्राप्त एक स्नातक को शिल्ड प्रदान करके सम्मानित किया गया। सम्मानित जनों के नाम इस प्रकार हैं :–

(१) कुमारी प्रवीणा रामधनी - Kumari Praveena Ramdhony, MBBS, Daughter of Mr & Mrs Harrydev Ramdhony

(२) कुमारी संजीवनी रामजी - Kumari Sanjeevnee Ramjee, MBBS, Daughter of Mr & Mrs Rajendra Prasad Ramjee

(३) कुमारी मीनाक्षी गाया - Kumari Minakshi Gaya, MBBS, Daughter of Mr & Mrs Sandhya Gaya & Grand Daughter of Shri Rajendrachund Mohith

(४) कुमारी लक्ष्मीता शिवपाल - Kumari Lukshmita Sewpal, MBBS, Daughter of Mr & Mrs Ravindradeo Sewpal

(५) कुमारी श्रुति लालबिहारी - Kumari Shruti Lallbeeharry, BA,LLM, Daughter of Dr & Mrs Jaychand Lallbeeharry

(६) धरम उदन - Dr Dharam Woodun,MD, Son of Mr & Mrs Dharam Woodun

(७) अमृतराज जीतन - Dr Amritraj Jeetun, MBBS, Son of Mr & Mrs Dharamraj Jeetun

उदय नारायण गंगू

सम्पादकीय

मौत का व्यापार

हमारे देश में प्राचीन काल से व्यापारी गण तरह-तरह के व्यापार करते आ रहे हैं और भविष्य में करते रहेंगे। कितने व्यापारी आयात-निर्यात द्वारा अपना व्यापार आयोजित करते हैं। कई व्यापारी स्थानीय सामानों का व्यापार करके अपना कारोबार सम्भालते हैं। इसी प्रकार छोटे-छोटे व्यापारी अपनी जीविका निमित्त विभिन्न प्रकार के धंधे करते रहते हैं। हमारे इस छोटे से देश में कई ऐसे व्यापारी हैं जो ग़ैर कानूनी तरीके से भी व्यापार करते हैं, जिनके काम-धंधों से हम सभी देशवासियों को क्षति पहुँचती है।

मोरीशस में जन संख्या की वृद्धि के अनुसार उद्योग-धंधे भी बढ़ते जा रहे हैं। उन उद्योग-धंधों के माध्यम से हज़ारों नागरिकों को जीविका मिल रही है। कानूनी तौर पर व्यापार करने वालों को हमारी सरकार प्रोत्साहित करती है और काले धंधे करने वालों पर पूरी निगरानी रखती है। फिर भी चोरी – चुपके से जुआखोरी, गांजे, अफ़ीम, ड्रग्स आदि के व्यापार हमारे देश में ज़ोरों से चल रहे हैं, जिन्हें रोकने में सरकार पूरी कोशिश कर रही है। इन हानिकारक धंधों से हमें भी दूर रहना चाहिए।

हम सभी नागरिकों के लिए यह बड़ी चिन्ता की बात है कि आजकल यहाँ मादक-द्रव्यों का व्यापार ज़ोर पकड़ रहा है। उन प्राणघातक व्यापारियों के बुरे धंधों से कितने भोले-भाले लोगों की जानें जा रही हैं और मौत के सौदागरों की तिजोरी भरती जा रही है। ये व्यापारी इतनी चालाकी से अपने काले धंधे चलाते हैं कि कभी-कभी पुलिस विभाग को भी जानकारी नहीं होती। ऐसी स्थिति में हमें भी इनके ग़ैर कानूनी धंधों की रोक थाम करने के लिए पुलिस की मदद करनी चाहिए – ताकि इनके विनाशकारी व्यापार शीघ्र बन्द हो जाए।

दुर्भाग्य से जिस परिवार का कोई सदस्य गांजा, अफ़ीम, आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करने लगता है उस परिवार का भाग्य फूट जाता है। मादक द्रव्यों के पीछे खर्च बढ़ जाता है, घर में बाधाएँ उपस्थित होने लगती हैं, रोग से ग्रसित व्यक्ति के इलाज तथा सेवा में अधिक व्यय होने लगता है। अन्त में घर की सम्पति के साथ-साथ नशे में चूर व्यक्ति की जान भी चली जाती है। अतः इस मौत के धंधों को समाप्त करना हमारा कर्तव्य है।

नशाखोरी से परिवार, पड़ोसी, समाज और राष्ट्र को हानि पहुँचती है। देश के विकास में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होने लगती हैं। नशा करने वालों के दुर्व्यवहारों से सर्वत्र अशान्ति फैल जाती है, मार-पीट, झगड़े, हत्याएँ आदि बढ़ने लगते हैं। रोग-ग्रस्त नशाखोरों की मौत हो जाने से अनेक जवान स्त्रियाँ विधवा हो जाती हैं, बच्चे अनाथ हो जाते हैं, वृद्ध माता-पिता असहाय हो जाते हैं। अतः इन विनाशकारी पदार्थों से दूर रहने में ही सब का भला है।

आज हमारे घरेलू वातावरण में बदलाव आ गया है। बहुत से परिवारों में शादी-ब्याह, पार्टी या जन्मदिन के अवसर पर बाप-बेटे, भाई-बन्धु एक साथ बैठकर नशा करते हैं, अनुचित भोजन खाते हैं और अपने बच्चों को भी खिलाते-पिलाते हैं। इसी प्रकार हमारे युवक-यवतियाँ धीरे-धीरे रेस्टोरेन्ट, बार या दुकानों में नशा लेने लगते हैं, इस तरह कुसंग में पड़ कर मादक वस्तुएँ इस्तेमाल करने लगते हैं और अपनी मौत को बुलावा देते हैं।

यह ध्यान रहे कि सज्जनों के मेल-मिलाप से अच्छा परिवार स्थापित होता है, सबल समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। दुष्ट जनों के कुकर्मों से परिवार, सखा-सम्बन्धी, समाज और राष्ट्र का पतन निश्चित होता है। दुर्जनों की वृद्धि होने से दुराचारों, दुर्व्यवहारों, डकैतियों की भरमार हो जाती है जिनके द्वारा सर्वत्र अशान्ति फैल जाती है। हमारे सुख, चैन, शान्ति लुप्त हो जाते है। इसी कारण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मादक-द्रव्यों का सेवन करना निषिद्ध है।

ऐसी गम्भीर स्थिति में वेदों के प्रचार-प्रसार और सत्संगों के माध्यम से हमारे जवानों को सही मार्ग-दर्शन कराने की जरूरत है ताकि हमारे परिवार और समाज के प्रत्येक सदस्य इन प्राणघातक वस्तुओं से मुँह मोड़ सके और मौत का व्यापार धीरे-धीरे बन्द हो जाए।

बालचन्द तानाकूर

रामपरसाद निऊर

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

रामपरसाद निऊर के पितामह को गन्ने के खेतों में काम करने के लिए भारत से शर्तबन्ध मज़दूर के रूप में लाया गया था। उनका एक ही बेटा हुआ जिनका नाम रखा गया रामजतन। रामजतन का एक ही बेटा हुआ लेकिन बेटियाँ तीन हुईं। बेटे का नाम रखा गया रामपरसाद। पिता ने अपने ही नाम के आधार पर पुत्र का नाम रखा था। जो तीन बेटियाँ हुईं एक का बेटा हुआ राजेश्वर जयपाल जो पढ़-लिखकर सरकारी स्कूल के अध्यापक बनें और आगे चलकर विधान सभा के सदस्य हुए थे और अंत में मंत्री भी बनें थे। वे अच्छे आर्य समाजी थे। दूसरी बेटी थी रामजतन की, वह व्याही गई थी बोनाकेई के पंडित डोमा के साथ। पंडित जी के साथ उनकी आठ संतानें हुईं – पाँच लड़के और तीन लड़कियाँ। सबके सब पढ़-लिखकर होनहार बनें। तृतियक शिक्षा प्राप्त कर एक बैरिस्टर बना और आगे चलकर जज। दूसरा पेशे से इंजीनियर हुआ, तो तीसरा आर्किटेक और चौथा डॉक्टर बना। आज सबके सब जीवित हैं। एक दो तो नौकरी से अवकाश भी ले चुके हैं।

रामपरसाद जिन्हें प्यार से सुखू बोलते थे। चार बच्चों की परवरिश का भार लेना सहज बात नहीं थी खासकर उस ज़माने में जब ग़रीबी अपनी चरम सीमा पर थी। स्कूल भेजना मुहाल था । रामजतन के लिए लड़कियों को सरकारी स्कूल में दाखिल करना असम्भव था। पर हाँ, आर्य समाज की स्थापना हो जाने से बैठकाओं में थोड़ी बहुत हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त हो गई थी। लड़कियों को पढ़ाना तो मना ही था ऊपर से धर्म परिवर्तन का भय बना रहता था। जब सरकार की ओर से स्कूल भी खुलने लगी तो बस्ती से दूर। रास्ते का सूनापन; झाड़-झंखाड़ से रास्ता धीरा हुआ होता था। पाँच-सात साल की लड़की को स्कूल भेजना खतरे से खाली नहीं होता। एक मात्र पुत्र रामपरसाद को चौथी पार करने के बाद पाँचवीं कक्षा तक स्कूल भेजा गया। किसी किसी परिवार में तो लड़कों को भी स्कूल नहीं भेजा जाता था।

पिता जी रामजतन ने घोर परिश्रम करके एक बीघा ज़मीन खरीदी थी। पिता-पुत्र साथ-साथ खेत में काम करने लगे। यदा-कदा दूसरों के खेतों में भी मज़दूरी करते। काम करते अब बढ़ने भी लगे थे। आगे चलकर एक मामूली नौकरी मिली पर खेती करना जारी रखा। भारतीय समुदाय में जीवन में आगे बढ़ने और तरक्की करने का एक ही ज़रिया था; वह था खेती-बारी और गोपालन। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार बढ़ जाने पर अब वैदिक धर्मावलम्बी अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने की ओर भी बहुत ज़्यादा ध्यान देने लगे। कहावत प्रसिद्ध है, 'विद्या न केवल धन कमाने का माध्यम बनती है बल्कि भविष्य का द्वार खोलने की कुंजी भी है। उससे जीवन का स्तर बढ़ जाता है। ये सब बातें सुखू जी की किशोर और जवानी अवस्था में बीत रही थीं।

रामपरसाद जी ने सच्चाई और ईमानदारी से काम किया। आगे चलकर तरक्की होती गई। धीरे-धीरे काफ़ी ऊँचे ओहदे पर पहुँच गए। उस ज़माने में अभी मंत्रालय नहीं बना था।

सरकारी सेवा में विभाग हुआ करते थे। जैसे शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग आदि। १९५९ के बाद मंत्रालय बना तो जिस विभाग में सुखू जी काम करते थे वह बन गया 'मिनिस्ट्री ऑफ़ बर्क्स' (Ministry of Works).

सुखू जी बचपन ही से समाज सेवा की ओर आकृष्ट हो गए थे। लगता था उनके गत जन्मों का संस्कार था। धार्मिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रचार प्रसार से लगाव होने लगा। धर्म और संस्कृति की ओर आकृष्ट होने लगे। जब दिसम्बर १९३९ में पंडित वासुदेव विष्णु दयाल भारत से पढ़कर आये तो उनकी विद्वत्ता से लोग बहुत अधिक प्रभावित हुए। सुखू जी पंडित जी के अनुयायी और प्रशंसक बन गए। अपने गाँव मोर्सेल्माँ से आंद्रे और आसपास के गाँवों में पंडित जी की गीता कथा, रामायण की कथा, उपनिषद् और वेद प्रचार का आयोजन करने लगे। भारतीय अखण्ड ज्ञान तक पहुँचने के लिए सब से बढ़िया औज़ार है हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान। हिन्दी एवं संस्कृत का ज्ञान अर्जित करने के लिए जहाँ से भी गुरु मिलते उनकी चरण-शरण में जाकर सीखते। उस समय तुलसीकृत रामचरितमानस का बहुत प्रचार था। उसमें आकर जुड़ गया स्वामी दयानन्द कृत कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश जो आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी माना जाता है।

धीरे-धीरे आर्य समाज एक क्रांतिकारी संस्था बन गया था। भारत से सिलसिलेवार संन्यासी, मूर्धन्य विद्वान्, प्रचारक और सुधारक हमारे टापू में आ रहे थे।

सुखू रामपरसाद का वैवाहिक जीवन तब शुरू हुआ जब उन्होंने बिलट परिवार की लड़की लक्ष्मीन से विवाह किया। वह रिव्येर दे जाँगी के क़रीब बेल एअर बाची मारे बस्ती की रहने वाली थी। उस दंपति से चार लड़के और दो लड़कियाँ हुईं।

हम पहले ही कह आये हैं कि सुखुमहाशय बहुत ही परिश्रमी थे। सरकारी नौकरी करते हुए, खेती-बारी करके अच्छी खासी आय हो जाती थी। इस लिए उन्होंने अपनी छः सन्तानों को अच्छी शिक्षा देने को ठान लिया था। आर्यसमाज के सत्संग में आने से अपनी लड़कियों को शिक्षा से वंचित न रखा। दोनों लड़कियों ने हिन्दी पढ़ी। ज्येष्ठ लड़की ने तो अपनी ससुराल फों जू साक की सायंकालीन पाठशाला तक वर्षों से हिन्दी पढ़ाई और दूसरी बेटी सरकारी स्कूल में लम्बे समय तक हिन्दी अध्यापन करने के बाद उपमुख्य अध्यापिका के ओहदे से अवकाश लिया। बड़े लड़के रुद्रसेन निऊर ने भारत में डाक्टरी सीखी और विशेषज्ञ बनने के लिए इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त की। आज आर्य सभा मोरिशस के माननीय प्रधान का पद सुशोभित कर रहे हैं। दूसरा लड़का ज्ञानेन्द्र सूचना विभाग के डिरेक्टर के उच्च पद प्राप्त करने के बाद स्वर्गवासी हुए। तीसरा आनन्द प्रिय ने सरकार में अभी हाल तक राजनयिक (Diplomat) के रूप में देश को अपनी अमूल्य सेवा प्रदान की और कनिष्ठ पुत्र अमीचन्द वी०डी०ओ० (Village Development Officer) से तरक्की पाकर प्रान्तीय विकास अफ़सर (Regional Development Officer) बन गए थे। वे भी अब न रहे। आज दो लड़के और दो लड़कियाँ जीवित हैं। इस जीवनी को पूरा कर ही रहे थे कि दुःखद समाचार मिला कि लम्बी बीमारी के बाद आनन्दप्रिय भी भगवान के प्यारे हो गए।

क्रमशः

गतांक से आगे

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ : उद्भव, विकास एवं उनका सिंहावलोकन

श्रीमती शान्ति मोहाबीर,एम.ए.

आर्यवीर / जागृति : १९४५

पं० लक्ष्मणदत्त द्वारा संपादित 'आर्यवीर/जागृति' हर शुक्रवार को निकलनेवाला एक साप्ताहिक पत्र था। अंग्रेज़ी और हिन्दी में छपनेवाला यह द्विभाषी पत्र था। 'आर्यवीर' सन् १९२९ से 'आर्य प्रतिनिधि सभा' का मुखपत्र था, जबकि सन् १९३९ से 'जागृति' 'आर्य परोपकारिणी सभा' का मुखपत्र था। 'आर्यवीर-जागृति' दोनों पत्रों का संयुक्त प्रकाशन था। शत्रुता युद्ध को जन्म देती है, अलगाव उत्पन्न करती है, परन्तु कभी-कभी अनायास ही यह मानव मन को एक सूत्र में बांध भी देती है। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते अभाव का साम्राज्य चहुँ ओर फैल गया था। उसी अभाव ने 'आर्यवीर' और 'जागृति' को दो से एक बना दिया। ऐसी विकट परिस्थिति में भी आर्यसमाज ने पत्र प्रकाशित करना नहीं छोड़ा। आर्यों को हिन्दुओं को निरंतर जगाते रहने में ही समझदारी सूझती थी, सो 'आर्यवीर' और 'जागृति' को एक होना पड़ा। पोर्ट लुई के राष्ट्रीय पुस्तकालय में १ जनवरी १९४८, संख्या १३५ से लेकर ३१ दिसम्बर सन् १९४८, संख्या १८५ के अंक सुरक्षित हैं ।

इसकी प्रकाशन-तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद देखे गये हैं। 'मॉरीशस लेखक संघ' के महासचिव इन्द्रनाथ ('आर्य समाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में', २००९, पृ० २००) ४ अप्रैल सन् १९४५ को 'आर्यवीर'- 'जागृति' के प्रकाशन का प्रारंभ बताते हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकार श्री एम०एन० वर्मा ('Arya Samaj and Arya Sabha', 1998, pp 81) १९४६ बताते हैं।

इतिहास वेत्ता श्री प्रह्लाद रामशरण मौन रहते हैं। वे केवल इसके बंद होने के बारे में बताते हुए लिखते हैं कि सन् १९५० तक 'आर्यवीर' - 'जागृति' का प्रकाशन होता रहा। ('प्रह्लाद रामशरण साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेत्ता', २००८, पृ० ४२४) साहित्यकार श्री सोमदत्त बखोरी ('Hindi in Mauritius', 1967, pp 83) के अनुसार इसका प्रकाशन ७ अप्रैल १९४५ से लेकर २० दिसम्बर सन् १९५० तक होता रहा।

'आर्यवीर'-'जागृति' के दो आदर्श वाक्य थे – 'सत्यमेव जयते' और 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'। जो उद्देश्य इन दोनों के थे, उनकी पूर्ति निमित्त यह प्रकाशित होता रहा अर्थात् मॉरीशस के हिन्दुओं के मानस-पटल में सहयोग, भाईचारे, सौहार्द के माधुर्य का बीजारोपण करता रहा और हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या आर्थिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक - इन्हें नयी ऊर्जा के साथ तेजस्वी तथा उन्नत बनने का संदेश देता रहा।

आर्योदय : १९५०

भारतीय गणतंत्र समारोह में भाग लेने के लिए सन् १९५० में स्वामी स्वतंत्रानंद तथा मणिलाल मगनलाल डाक्टर मॉरीशस पधारे थे। स्वामी स्वतंत्रानंद की सलाह एवं उनकी प्रेरणा से 'आर्य परोपकारिणी सभा' एवं 'आर्य प्रतिनिधि सभा' 'आर्य सभा मॉरीशस' में परिणत हो गईं। तभी से 'आर्यवीर'-'जागृति' का 'आर्योदय' नाम से पुनर्जन्म हुआ। एक लेख में स्वामी स्वतंत्रानंद ('प्रह्लाद रामशरण भारतीय वाङ्मय में मॉरीशस की संस्कृति', १९९४, पृ० ६७-६८) स्वयं लिखते हैं कि वे ३ जनवरी सन् १९५० को मॉरीशस आये थे। उनका मुख्य लक्ष्य था दोनों सभाओं को मिलाना। इसके लिए उन्हें बहुत भागदौड़ करनी पड़ी थी।

अन्त में 'आर्य परोपकारिणी सभा' से 'परोपकारिणी' शब्द हटा दिया गया और 'आर्य प्रतिनिधि सभा' से 'प्रतिनिधि' शब्द। दोनों के 'आर्य' और 'सभा' को रखकर 'आर्य सभा' नाम दिया गया। १३ मई सन् १९५० को 'आर्य सभा' की रजिस्ट्री करवाने के बाद वे १४ मई सन् १९५० को ४.३० बजे प्रातः मॉरीशस से विदा हुए। (Indradhanush M. Mohith Special Issue 2002, pp 6) तभी से 'आर्योदय का भी उदय हुआ और आज तक 'आर्योदय' 'आर्य सभा मॉरीशस' का मुखपत्र है।

'आर्योदय' साप्ताहिक था और पोर्ट लुई के राष्ट्रीय पुस्तकालय में इसका चौथा अंक, जो बुधवार २१ नवम्बर १९५० को प्रकाशित हुआ था, सुलभ है। श्री सोमदत्त बखोरी ('Hindi in Mauritius', 1967, pp 84) के अनुसार 'आर्योदय' के प्रकाशन का प्रारंभ ९ नवम्बर १९५० को हुआ था। प्रारंभ में इसके संपादक पं० आत्माराम विश्वनाथ थे। पंडित मोहनलाल मोहित के विशेषांक (इन्द्रधनुष २००१, पृ० ६) के संपादकीय लेख के अनुसार पंडित आत्माराम की मृत्यु के पश्चात् श्री दीप नारायण पदारथ और श्री लक्ष्मी जोधन ने १९६३ तक 'आर्योदय' के संपादन का भार वहन किया।

२२ फाक्वार स्ट्रीट, पोर्ट लुई में इसका कार्यालय स्थित था। इसका मालिक 'आर्य सभा मॉरीशस' था। श्रद्धानंद प्रिंटिंग से मुद्रित एवं प्रकाशित होनेवाला यह पत्र द्विभाषी था अर्थात् हिन्दी और अंग्रेज़ी में छपता था। इसका आदर्श वाक्य था – 'सत्यमेवजयते नानृतम्' 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम'। मुखपृष्ठ पर स्पष्ट लिखा हुआ होता था – 'आर्य पत्रिका तथा आर्यवीर संयुक्त'। (आर्योदय, २९ नवम्बर १९५०)

'आर्योदय' का प्रथम अंक ८ नवंबर १९५० को संभवतः प्रकाशित हुआ होगा। चूँकि यह एक साप्ताहिक पत्र था और इसका चौथा अंक बुधवार २९ नवंबर १९५० को प्रकाशित हुआ था, तो इसका प्रथम अंक तीन सप्ताह पूर्व प्रकाशित हुआ होगा। श्री प्रह्लाद रामशरण ('एक मॉरीशसीय साहित्यकार की आस्था', २००१, पृ० ४४) के अनुसार 'आर्योदय' का प्रकाशन ४ नवंबर १९५० को प्रारंभ हुआ था। श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ('आर्य समाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में', २००९, पृ० २००) 'आर्योदय' का जन्म ९ दिसंबर १९५० को बताते हैं। इसके प्रथम संपादक वे पं० काशीनाथ किष्टो को मानते हैं। परन्तु स्वयं ही एक लेख में वे पं० काशीनाथ की मृत्यु तिथि १८ अप्रैल १९४७ बताते हैं। (इन्द्रनाथ, 'महान् पंडित काशीनाथ किष्टो', २०१०, पृ० ८०) अतः आर्योदय' के संपादन कार्य से पं० काशीनाथ का जुड़ना असंभव है। पं० आत्माराम विश्वनाथ, पं० मोहनलाल मोहित व श्री मूलशंकर रामधनी 'आर्योदय' के प्रधान संपादक अवश्य रहे थे।

आज आर्योदय साप्ताहिक रूप से निकलने वाला त्रिभाषी पत्र है। इसमें फ्रेंच, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में लेख छपते हैं। वर्तमान में 'आर्योदय' के प्रधान संपादक डॉ० उदयनारायण गंगू हैं। इस पत्र का आदर्श वाक्य है – 'सब को मित्र की दृष्टि से देखें'। 'बहादुर प्रिंटिंग लिमिटड' में मुद्रित यह पत्र ऑन लाइन भी पढ़ा जा सकता है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

मन्थ-कर्म, संतानोत्पत्ति तथा गर्भाधान

वानप्रस्थी विश्वदेव मुनि

उच्च-कोटि के पुत्र-पुत्री को जन्म देने की चाहना करने वालों को क्या-क्या करना चाहिए, इससे विवाहित लोगों को अवगत होना आवश्यक है। पद्धति जानने वाले गुरु वा पंडित होते हैं।

कार्य कब करना? – उत्तरायण-काल में शुक्ल-पक्ष के १२ (बारह) दिन, उपसद्-व्रत (उपवास) करें, अर्थात् सिर्फ़ दूध पीयें। फिर औषधियों का संस्कार (शुद्ध) करें, फलों को मिलाकर पात्र में रखें; फिर मन्थ कर्म से संस्कार करके, अर्थात् घी से, प्रार्थनाओं से आहुति देवें। इस प्रकार ऊँची भावनाओं से भावित किए हुए मन्थ का पान करने से महान् बनने का संकल्प दृढ़ होता है।

सिर्फ़ मन्थ पीने मात्र से फल नहीं मिलता; जब भावना उच्च विचारों से जागृत की जाती है और दोनों पति-पत्नी इस संकल्प से गर्भाधान करते हैं, वीरवती सन्तान की इच्छा करते हैं तब कामना पूर्ण होती है। यह एक पवित्र 'यज्ञ' है, जन्म-स्थान एक वेदी है, कुंड है। इस प्रकार जो पुरुष यज्ञ के समान बरतता है, उसकी स्त्री उच्च कोटि की सन्तान को जन्म देती है। गृहस्थियों का यही आचार-धर्म है।

जात-संस्कार में पुत्र के कान में पिता – **'वेदोसिति'** कहता है अर्थात् 'तेरा गुप्त-नाम वेद है।' संस्कार, कर्म-काण्ड के अनुकूल करना अनिवार्य है।

चलते-चलते एक प्रचलित उदाहरण देते हैं – एक किसान बीज बोने से पहले मिट्टी का संस्कार करता है, अर्थात् ज़मीन साफ़ करता है, हल से भूमि की जुताई करता है, जो वस्तु बाधाएँ डालती हैं, जैसे घास, पत्थर आदि, सब अलग करता है, बीज बोने का स्थान बनाता है, उसमें खाद एवं अन्य पदार्थ डालकर तब बीज बोता है। फिर सींचता है। जब बीज पनपता है, तब कीड़ों से बचाता है। साथ-साथ प्रार्थना करता है कि – हे प्रभु! मेरी फ़सल अच्छी हो। मौसम अनुकूल हो; इसी तरह जब पति-पत्नी संकल्प करते हैं कि बच्चों को उच्च कोटि की शिक्षा देंगे, उनके भविष्य को उज्ज्वल बनायेंगे, तो उनकी कामना सिद्ध क्यों न होगी ?

..... मैं एक जीता-जागता उदाहरण हूँ। फेरने गाँव से दो-तीन पत्थर चलकर दूसरे गाँव – 'रिव्येर दे क्रेओल' के प्राइमरी स्कूल में पढ़ा। जब मैं छठी क्लास में था तब एक दिन हेडमास्टर ने बच्चों से पूछा कि आगे जीवन में क्या करोगे? मैंने कहा – टीचर ! यह १९४५ की बात है। फेरने गाँव के इतिहास में मैं पहला बच्चा छठी पास होकर कॉलेज जाने लगा। 'सिन्योर' तथा जी.सी.ई. पास कर उसी कॉलेज में पढ़ाया भी। बाद में सरकारी स्कूल में पढ़ाया। डिप्युटी-हेड-टीचर पद से अवकाश लिया। यह है दृढ़ संकल्प का फल।

आज मैं ८० साल का होने वाला हूँ। माता-पिता के दिये संस्कार के कारण ही आज से दस वर्ष पहले मैंने एक भारतीय संन्यासी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली थी, उस समय, जब हमारे देश में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का वातावरण छाया हुआ था।

पढ़ाई तथा स्वाध्याय एक तपस्या है। जब मैं माध्यमिक शिक्षा आरम्भ करने लगा था तब मैंने स्वयं कठोर अनुशासन रखा था। मेरे माता-पिता ने मुझे यह संस्कार दिया था।

वर्तमान काल में, देश में जो माहौल छाया हुआ है, उचित संस्कार की कमियाँ के कारण आज उसके फल भोग रहे हैं।

विद्यार्थियों तथा युवकों के व्यवहारों में स्वतन्त्र छूट देना छात्रों को दण्ड देना कानूनी जुर्म है। इससे एक गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी है।

धार्मिक शास्त्र तो बताता है कि माता के गर्भ से ही उच्च संस्कार प्राप्त करना चाहिए। फिर जन्म के बाद, शिशु को माँ से दूर नहीं होना चाहिए; माँ की शारीरिक गरमी से बच्चे की वृद्धि पर सीधा असर पड़ता है, लेकिन वर्तमान में स्त्री-पुरुष की बराबरी शिक्षा से इन दोनों में मुक़ाबिला खड़ा हो गया है। पढ़ाई बुरी बात नहीं; लेकिन अपनी ज़िम्मेदारियों तथा कर्तव्यों से विमुख होना बुरा है।

आजकल बच्चों को पराए हाथों में छोड़ने लगे हैं, डिब्बे के पाउडर दूध पिलाया जा रहा है। माता ईश्वर के दिये हुए दूध से बच्चों को वंचित करती है। प्रतिदिन मैं इस दृश्य का गवाह हूँ कि सुबह, मोटर में पिता आता है, सोते हुए शिशु को 'नसरी' में छोड़ जाता है। शाम को माँ-बाप घर लौटते हैं, थक कर, अब गृहस्थी की और ज़िम्मेदारियाँ, बच्चों को प्यार देना, बड़े बच्चे ट्यूशन से नहीं लौटे हैं, जब लौटते तो वे भी थककर टी०वी० 'ऑन' करके 'रिलाक्स'; डिनर साथ लेते या नहीं, आपस में बातचीत होती हो तो ठीक; ऐसी हालत में क्या संस्कार बन सकता है? संयुक्त परिवारों में हो तो हो, तनाव रहित हो तो भाग्यशाली परिवार है। आजकल अपनी अपनी गृहस्थी अलग-अलग बनाते हैं, बच्चे बड़ों के अच्छे संस्कार से वंचित हैं।

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेदों से, शास्त्रों, गृहसूत्रों से, 'संस्कार विधि' पुस्तक बनायी। क्या हम अपने दिल पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि आर्यसमाज परिवारों में क्रम सो होता है? 'बर्थडे' का ज़माना आ गया है, रेडियो, फ़िल्मों में तो खूब धूम मचाते हैं। हम नक़ल करते जाते हैं।

उपसंहार के रूप में यही कह सकते हैं, कि जब तक आचार-धर्म नहीं स्थापित होगा, बेढंग की कुरीतियाँ बढ़ती जायेंगी। आर्य-पद्धति, जो प्रोजेक-पद्धति है, योजना-पद्धति है, जिसमें बुनियादी-तालीम की ज़िद रखी जाती है, नहीं अपनाई जाएगी तो कोई और उपाय से सुधरेगा नहीं। योजना-पद्धति शिक्षा का मूल-भूत सिद्धान्त है। अमेरिका और पाश्चात्य देशों ने यही पद्धति अपनाई है। सरकार तथा परिवारों का सरदर्द का इलाज इसी में है।

गुरुकुल काँगड़ी की एक योजना-पद्धति है। इसी गुरुकुल के विद्यार्मातण्ड प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकर एक उदाहरण है, और कितने हुए हैं।

हम भारतीय-मूल के वंसज हैं, चाहे दक्षिण भारत के हो या उत्तर भारत के, अपनी-अपनी प्रार्थना के मन्त्रों के आदि में 'ओ३म्' का ही उच्चारण करते हैं, वेदों के ही मन्त्र अपना कर बोलते हैं, चाहे भाव से अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार आडम्बर बहुत है, यह स्वाभाविक है, इसे नकार कर क्या हम एक सूत्र में बंध नहीं सकते? प्राचीन-काल में सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम श्री राम ने अनार्य राक्षसों को नाश करके धर्म की स्थापना की थी। उत्तर दक्षिण, पूरब और पश्चिम भारत के लोग आज तक उनके गुण गाते हैं, उनकी आकर्षण-शक्ति ने लोगों को चुंबक की तरह एक सूत्र में पिरोया है। चाहे हम किसी भी प्रान्त के क्यों न हो, भारत के ही वंशज तो है। दूसरे देशों में राम के नाम लेकर मग्न होकर नाचते-झूमते हैं। देशकाल परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए मोरिशस में एकता अत्यन्त ज़रूरी है। हम भारतीय-मूल के हैं। हिन्दुस्तान मूल के नहीं ; यह नाम विधर्मियों ने हम पर थोपा है। ऋषि दयानन्द जी के पूने में दिये भाषणों को 'उपदेश मञ्जरी' नामक पुस्तक में पढ़ें। एक भाषा – एक धर्म का प्रचार किया। हमारी रक्षा के लिए एकता की पुकार है। अपनी प्रान्तीय भाषा तथा संस्कृति बराबर रखें।

अफ़्रीकन मूल के लोगों को देखें, अफ़्रीका के कोने-कोने से ग़ुलाम बनके आये थे; अपनाया हुआ ईसाई धर्म तथा अपनी संस्कृति के आधार पर कैसे एक सूत्र में बन्धे हैं।

हमारे वेद में संगठन सूक्त है : **संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।**
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

और दूसरा मन्त्र है –

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

सारे विश्व को श्रेष्ठ, आर्य बनायें। यह आर्यसमाज के तीसरे और छठे नियम की पुष्टि करता है। वैदिक धर्म किसी विशेष जाति के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए है, क्योंकि वेद ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है।

पृष्ठ २ का शेष भाग

'आर्योदय' के मुखपृष्ठ पर वेदों के मंत्रों के शब्दार्थ एवं भावार्थ, प्रधान संपादक का भावपूर्ण एवं शिक्षाप्रद लेख एवं संपादकीय छपे होते हैं। आजकल 'आर्य सभा मॉरीशस' के उपप्रधान श्री बालचंद तानाकूर संपादकीय लेख लिख रहे हैं। अन्य तीन पृष्ठों पर आर्य जगत् से जुड़े समाचार, विद्वानों की जीवनियाँ, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उन्नति संबंधी लेख, आवश्यक सूचनाएँ, आर्य समाज की गतिविधियों का विवरण - विश्लेषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, संचार माध्यम, हिन्दी भाषा की स्थिति, देशी-विदेशी समाचार एवं अनेक मुद्दों पर लेख छपे मिलते हैं। कविताएँ, संस्मरण, निबंध आदि साहित्यिक विधाओं के भी दर्शन प्रायः प्राप्त होते हैं।

आधुनिक मॉरीशस में हिन्दुओं की परिस्थिति काफ़ी हद तक सुधरी है। वे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से उन्नति के मार्ग पर कदम बढ़ा चुके हैं। परन्तु इन्हें प्रमाद का शिकार बनने में देर नहीं लगती है। व्यसनों एवं बुराइयों में फँसकर इन्हें दर्प का अनुभव होता है। अन्य जातियों के समक्ष अपनी बेइज्ज़ती कराते इन्हें तनिक भी लज्जा नहीं आती है। इसी कारण आर्यसमाज एक प्रहरी की भाँति चौबीसों घण्टे अपने पत्र 'आर्योदय' के माध्यम से हिन्दू समाज पर नियंत्रण बनाए रखता है। और जब कभी ओजपूर्ण लेखों की आवश्यकता महसूसी जाती है तब उन्हें प्रकाशित कर हिन्दुओं को सही मार्ग पर लाकर खड़ा किया जाता है। लेखों के शीर्षकों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं – 'हमारा कल्याण कैसे हो?', 'नारी की भूमिका', 'कैसा भोजन खायें?', 'दीर्घ जीवन जीने के साधन', 'अंधविश्वास', 'हिन्दू नवयुवक', 'मातृ भाषा', 'हमारी पवित्र भाषा' आदि ।

विशेष अवसरों को मनाने हेतु - जैसे कि 'सत्यार्थ प्रकाश मास', 'दीपावली', 'ऋषि निर्वाण दिवस', 'ऋषिबोधोत्सव', 'श्रद्धानंद दिवस' वेद मास आदि - आर्योदय के विशेषांक प्रकाशित होते हैं,जो पत्र के रूप में न होकर पत्रिका रूप में होते हैं।

विशेषांक एवं अल्पकालिक पत्र-पत्रिकाएँ

विशेष अवसरों तथा पर्वों को मनाने के लिए आर्यसमाज विशिष्ट ढंग से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है। बाह्य साज-सज्जा की दृष्टि से ये विशेषांक रंगीन चित्रों से सुसज्जित आकर्षक दिखते हैं और विषय की दृष्टि से प्रभावोत्पादक, शिक्षाप्रद, मौलिकता एवं वैविध्य लिये हुए होते हैं। इनमें देश-विदेश के उच्चकोटि के लेखकों के लेख छापे जाते हैं।

विशेषांकों के साथ-साथ आर्यसमाज 'स्मारिका' पत्रिका का भी प्रकाशन करता है। 'स्मारिका' स्थापना शती, रजत जयन्ती, स्वर्ण जयन्ती, हीरक जयन्ती, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलनों के उपलक्ष्य पर प्रकाशित होती है।

विशेषांक प्रकाशित करने की परिपाटी पंडित काशीनाथ ने प्रारंभ की थी। उनके अटूट प्रयास व लगन से 'शताब्दी अंक' के नाम से 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का विशेषांक प्रकाशित हुआ था। श्री रामशरण ('मॉरीशसिय आर्य समाज की विभूतियाँ', २०१२, पृ० २१) के अनुसार यह विशेषांक मॉरीशस में हिन्दी आन्दोलन की दृष्टि से एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

सन् १९५४ से लेकर सन् १९५९ तक पंडित मोहनलाल मोहित वार्षिक पत्रिका 'दीवाली संदेश' का प्रकाशन करते थे। (Indradhanush 2002, pp 30) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर के संपादन में आर्य युवा वर्ग की ओर से 'वैदिक जर्नल' का भी प्रकाशन सन् १९७७ से लेकर सन् १९७९ तक हुआ। सन् २०१५ से आर्य युवक संघ की ओर से एक ई-पत्रिका प्रकाशित हो रही है जिसे ऑन लाइन पढ़ा जा सकता है।

हिन्दू जाति की एक त्रुटि यह है कि जैसे ही उसे अपना आज सुरक्षित दिखाई देती है, वह भविष्य की चिन्ता से पूर्णतया मुक्त होकर विचरण करने लगती है। हतभाग्य ! सौ वर्ष पूर्व अल्पशिक्षित तथा अभावग्रस्त हिन्दुओं को निज समाचार पत्र के प्रकाशन का महत्त्व मालूम था। आज सुशिक्षित और सुसंपन्न हिन्दू अज्ञात बन रहे हैं। जिस दिन हिन्दुओं को अपनी नैया डूबती दिखाई पड़ेगी, उस दिन ये एक बार फिर पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लेंगे, क्योंकि अबोध होने का नाटक ये अवश्य करते हैं, परन्तु इन्हें ध्यान है कि पत्र-पत्रिकाएँ धर्म और जाति के जीवन-मरण का प्रमाण पत्र है ।

Shrāvani & Krishna Janmāshtami

Svādhyāya, ātmanirikshan & ishvara pranidhāna

Shrāvani is time to boost up our level of *svadhyāya*, i.e. the study of the Vedas and ancillary literature (*ārsha grantha*) as expounded by the sages of yore (*rishis*). *Svadhyāya* has both a direct and subtle impact on our life.

The practice of *svādhyāya* empowers us to move one step forward ...*ātmanirikshan*, during which we regularly observe and reflect on our character, actions and basic disposition / tendencies *(guna, karma & svabhāva)*.

The multi-fold benefits of *ātmanirikshan*

Amongst others, we benefit from:

- Greater self-knowledge …we become more aware of all the drifts-from-the-ideals, whether due to our inherent nature (*svabhāva*) or from past conditioning (*samskāras*) and we shall immediately, of our own accord, take timely remedial measures.
- A clear mind to face challenges and adverse situations …we shun envy, anger, greed, infatuation, fear *(kāma, krodha, lobha, moha, bhaya)* and the likes.
- High thinking and simple living …the sharper we are in *ātmanirikshan*, the more harmonious and productive we shall become …shall adhere to righteousness (*dharma*) and the codes of social and personal discipline (*yama-niyama*) in lifestyle.
- Better social interactions …we develop attitudes of (i) friendliness toward the happy, (ii) compassion for the unhappy and those in need, (iii) delight vis-a-vis the virtuous, (iv) disregard towards the wicked, and more importantly the mind-stuff retains its undisturbed calmness (*maitree-karunā-muditā-upekshānām*...YD 1.33.)
- Higher levels of joy and fulfilment …at both the gross (physical, social) and subtle (mental, moral / spiritual) levels.
- A better self, family, society, nation and world.

The T&C (terms and conditions) to a truthful exercise of *ātmanirikshan* include measuring our personal experiences with the wisdom of the scriptures; cultivating awareness of our thoughts, speech and actions to avoid the drawbacks of being-wise-after-the-event; listening to the divine inspiration or the inner voice within us.

Ishvara pranidhāna,* the next step after *svadhyāya* in the list of *yama-niyama

Ishvara pranidhāna is total surrender to God. Maharishi Swami Dayanand Saraswati expounding on the mantras of *Ishvara-stuti-prārthana-upāsna* has clearly described the concept *kasmai devāya havishā videhma*: the practice of yoga to attain God-realisation, through unconditional devotion (*bhakti*) by the soul (*ātmā*) which commands the *mana* – mind (*antahkaran* or 11th *indriya*).

Swamiji further explains devotion and meditation upon the Almighty as total surrender to Him, and a disposition to be ever ready to put up with the highest efforts to follow His rules and directions. By so doing, we shall be eligible to receive his benevolence *vayam syāma patayo rayinām* (RV. 10/121/10) , i.e. be master of material and spiritual treasures.

Arjuna's Unconditional Submission to the teachings of Yogiraj Shri Krishna

Mahabhārata contains a vivid example of what *Ishvara pranidhāna* is likely to be. Before the war Arjuna and Duryodhana both went to seek assistance from Krishna who was sleeping; Arjuna humility led him to be seated the feet of Krishna and Duryodhana, with his self-assumed superiority, took seat by the side of the head.

Krishna woke up to be greeted first by Arjuna. Duryodhana intervened to say that he was the first one to reach his place. He simply forgot that waking up from sleep even he would first see things at his feet. Nevertheless he requested and obtained the whole army of Krishna to fight for him. Krishna told Arjuna that he had nothing left to give to him. Arjuna requested Krishna be his guide / mentor, as a charioteer in the battle.

The result was …the amazing defeat of Duryodhana and the Kauravas in spite of their numerical superiority …the victory of the Pandavas …the Geeta as an immemorial legacy to the world.

The T & C's to succeed

To succeed in life we need to totally surrender ourselves to the rules and directions of God whom the Vedas depict as Omnipresent, Omniscient, all-Just, all-Benevolent ...etc. God treats all living things as his son, friend, and dearest ones. He is always within us and by our side to guide us to the correct destination. Yet we fail to catch the divine inspirations and as failure strikes we say …only if we knew … I do not recall where I had erred …I do not know for what is the cause of suffering.

We need to revisit our deeds and resolve not to repeat the mistakes. God is our preceptor and the judge who awards us the fruits of our actions (*karma*) solely on merits. Devotion and meditation on his *guna, karma* and *svabhāva* will mark our life like the water droplets falling continuously on a stone. *Stuti*, glorification of God has the same effect. Moreover the mantra *Agne naya supathā rāye asmān...* (YajurVeda 40.16) instructs us to take advantage of the insights of sages and learned persons.

The benefits of *svādhyāya*, *ātmanirikshan* and *Ishvara pranidhāna*

We better understand the process of meditation (*dhyāna*), a capacity building initiative to redirect our mind towards the object of meditation or focus. This skill translates to the ability throughout our days to pull our minds away from unhealthy focus towards constructive ones ...healthier thoughts; shifting from … blame or shame to compassion and commitment …from rumination to forward movement …from negativity to positivity …from destructive or idle criticism to creativity; and be goal oriented.

The example of an outstanding focus is when Arjuna shot his arrow into the eye of a revolving target above his head, while looking at its reflection in water at ground level.

Further down the same epic we read about a disturbed Arjuna, entangled in the bonds of attachment, refusing to fight against relatives who symbolised *adharma* (mischief, evil, deceit …etc.) The guidance of Krishna to engage in the battle for dharma (*righteousness*) was crucial to the change of attitude in Arjuna …moving from blame to goal-oriented commitment and victory crowned those who explored the most appropriate and ethical avenues of life.

Bhishma, lying defeated on the bed of arrows, relates the why's and how's he sided with the wrong side in the war … food from the Kauravas had desensitised the discriminating faculty of his mind (*jaisā ann vaisā mana*).

Adherence to *dharma* and *yama-niyama* cultivate a sound physical, spiritual, social, national and universal growth like the antivirus and antimalware we use to protect our computers and other electronic gadgets.

Success is guaranteed provided the rubber meets the road, not when the engine and wheels are running full swing but on an elevator. Svādhyāya, ātmanirikshan and ishvara pranidhāna empower us to benefit and learn from every experience …there will be no regret in life.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius

Bibliography :
*(i) Sanskāra Vidhi, Satyārtha Prakāsh, Rig-Vedādi-Bhāshya-Bhumikā & Ya*jurVeda *Bhāshya by Maharishi Dayānanda Saraswati*
(ii) Yoga Darshan by Maharishi Patanjali & Bhāshya by Maharishi Vyāsa
(iii) Yogārtha Prakāsh by Swāmi Satyapati Parivrājak,
(iv) Ekādashopnishad & Shrimad Bhagwad Geetā by Dr. Satyavrat Siddhāntālankār
(v) Mahabhārata by Swāmi Jagdishwarānanda Saraswati

First Shravani Diwas in Rodrigues

Ramnik Cheetoo, President Rodrigues Arya Samaj

The Rodrigues Arya Samaj was well established on 23 March 2016 by a delegation of 40 Mauritian Arya Samajists headed by Dr Ouday Narain Gangoo, president of Arya sabha Mauritius, to promote the teachings of Swami Dayanand Saraswati . Shree Ramnik Cheetoo, a resident of Rodrigues was unanimously elected president of the foundation of a new branch in Rodrigues by the members present on that auspicious day. Since then a weekly Yajna is been performed by the lovers of the Vedic dharma who have eventually accepted to pray and adore the only one God who is the Supreme of the universe.

During the 'Shravani Mas', members of the Rodrigues Arya Samaj also celebrated the 'Shrāvani Mahotsava' mainly with 'Brahmayajna' and 'Agnihotra' on Sunday 14 August at the its official seat in Port Mathurin.

The yajna was officiated by Shree Ramnik Cheetoo, the first Hindu priest of Rodrigues who was recently in Mauritius with his 10 year old daughter, Dilrukshi Cheetoo, for a crash course in Vedic priesthood. He satisfactorily completed the Vedic studies at the Gurukul in Pailles by a team of Pandits mainly Pandit Ramsoondar Sobhun ji under the guidance of the most learned Dr Oudaye Narain Gangoo, the Academic Dean of Rishi Dayanand Institute Mauritius. Now he is back to Rodrigues to disseminate the Vedic culture among the Rodriguans.

Pandit Ramnik Cheetoo was born in an academic family at camp de masque pave and was the son of late Narain Cheetoo, Head Teacher at Camp de Masque Govt School in 1970's. The first time he was recognized as a social worker in Rodrigues was in 2013 when he personally took the initiative to organize a common prayer at Malabar "ANOU ALLE PRIER POU LAPLI TOMBER". Different religious priests participated in that meaningful prayer with the presence of members of the Rodrigues Regional Assembly.

When the 'Rodrigues Hindi Speaking Union' was established in September 2014,he became the first president of the union who has been engaged in the promotion of Hindi and Indian in Rodrigues. Last year the Right Hon Prime Minister of Mauritius, who was present at the celebration of Rodrigues Hindi Diwas 2015,in his speech congratulated Shree Cheetoo for his determination to Propagate Hindi.

At the age of 59 the President of Hindi Speaking Union and the President of the Arya samaj, fortunately becomes the first Hindu Priest of Rodrigues, which will benefit the Hindu Community at large with a population of 300 people on the Island of Rodrigues.

Books available at Arya Sabha

Arya Sabha Mauritius has at heart the dissemination of education and Vedic Literature. To encourage more and more people to acquire greater knowledge in general, the Sabha runs two libraires, namely :--

(1) 'Mrs Koolwatee Jhummon Library' which is a lending library. It is at Pailles Education Centre, Rishi Dayanand Institute. It has books on a wide variety of subjects such as books on Vedic Literature, the Vedas, Hindi, Hindi Literature, Sanskrit, Sanskrit Literature, Philosophy, Sociology, English Literature, and Religion amongst others. Please find below a list of books available for borrowing and for reference work.

(2) 'Dhruvanand Pustakalaye' which is found at Arya Bhawan, Arya Sabha, Port Louis. This is a selling library. We offer on sale a list of books on a great variety of subjects and topics. Some of these are the Vedas, Upanishads and other books on Vedic Culture, books on Hindi Language, Hindi Literature, Sanskrit Language, Sanskrit Literature, Philosophy, History of the Arya Samaj, The Indian epics (Ramayana and Mahabharata), books on religion, Yajna, Bhajan, books in English or Hindi with stories on moral values, especially for the young.

Below is a list of books on sale at Arya Bhawan, Arya Sabha Mauritius, Port Louis :---

1. The Elementary Teachings of Hinduism (Book 1)
2. Essential Teachings of Hinduism (Book 3)
3. Swami Dayanand – In the eyes of some distinguished scholars
4. Value Crisis – The Happy Family through Family Communion
5. Sermons Delivered by Maharshi Dyanand Saraswati
6. An Introduction to the Commentary on the Vedas
7. The Light of Truth
8. Aryabhivinaya
9. Solutions to Modern Problems in Vedas
10. Ideals and Values in Ramayan
11. Bhagwad Geeta – The Gospel of Timeless Wisdom
12. The Holy Vedas
13. The Makers of the Arya Samaj
14. Quest – The Vedic Answers
15. Rational Faith in God
16. Swami Dayanand – His life and Teachings
17. Vaidika Marriage Ceremonial
18. Back to the Vedas
19. Anthology of Vedic Hymns
20. Hindu Samskaras and many others

We hope that the public will avail themselves of these facilities at the lending and selling libraries to learn more about Vedic Culture and other subjects and increase their general knowledge.

Mrs R.S. Puchooa
President
Library Committee

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038